।। अब जिया न जाए ।।

घुट - घुटकर अब -
जिया न जाए ।

घुटन में -
बहुत जीए अब तक ।
अधर भी -
बहुत सीए अब तक ।

उधड़ा दिल अब -
सिया न जाए ।

दीवारों के बीच -
घिरे हम ।
घर की नज़र में अब -
गिरे हम ।

ज़हर अब और -
पिया न जाए ।

आंगन से भी -
हम जुदा हुए ।
अपने ही कुछ -
अब खुदा हुए ।

ग़म का छोड़ा -
ठिया न जाए ।

अश्क़ भी छोड़ें न -
आंख कभी ।
हम - सी ठूंठ हुई -
शाख सभी ।

तम को दीया -
दिया न जाए ।

- अशोक आनन, मक्सी

नज़्म

जहरीली हवा घुटती जिंदगानी दोस्तों ।
यही है नये दौर की कहानी दोस्तों ।।
पर्वतों पे देखो कितने बांध बन गये ।
जवां नदी की गुम हुई रवानी दोस्तों ।।
विज्ञान की तरक्कियों ने चिड़ियां मार दीं।
अब भोर चहकती नहीं सुहानी दोस्तों ।।
चारों ओर धुएं की हैं परतें जम रहीं।
अंबर से बरसेगा जहरीला पानी दोस्तों ।।
बर्बादियां निशान अपने छोड़ जाएंगी।
कुदरत पे कब्जा करने की जो ठानी दोस्तों।।
कुदरत के कहर बढ़ गये हैं आज उतने ही ।
जितनी बढ़ी लोगों की मनमानी दोस्तों ।।
पेड़ थे परिंदे थे झरते हुए झरने ।
किताबों में रह जाएगी कहानी दोस्तों ।।
बंजर धरा विषैला पानी और यह धुआं।
इक दिन करेंगे सभ्यताएं फानी दोस्तों।।
कुदरत जो रूठ गई आदमी के स्वार्थ से।

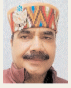

तो न बचेगा राजा
न ही रानी दोस्तों।।
कुदरत के साथ
जीने का प्रयास
कीजिए।
धरती पे अगर जिंदगी बचानी दोस्तों ।।

अशोक दर्द

फिर सुबह होगी...

जो बीत गया
सो बीत गया
जो बाकी है
जीवन शेष है... !

प्रत्येक सुबह
लगता है
आज विशेष है... !!

आहिस्ता आहिस्ता
दिन चढ़ती है
आशाओं की दीप
जलती है बुझती है... !

परन्तु दिन तो
बीता हुआ
कल का प्रतिछाया होता है
बीता हुआ कल का
लय में ही चलता है... !!

किसी दिन तो मानो
बीता हुआ कल से
खराब होने की
प्रतिस्पर्धा में होता है... !
चोटी पर ही
पहुंचने की
दौड़ लगाती है... !!

परन्तु...,
मन ही तो है इंसान की
हरेक अंधकार के
अंत में
फिर सुबह होगी की
प्रतीक्षा में रहता है... !!

मनोज शाह मानस, नारायणा गांव, नई दिल्ली

अकेले का दर्द

कोई मेरा मन चुरा ले
इसमें मेरा मन नहीं लगता।
कोई मेरा देह चुरा ले
इसमें अब कोई हलचल नहीं होती।
कोई मेरा घर भी उठा ले
इसमें रिश्तेदार कहां है ?
कोई मेरा दिल लूट ले

उसमें शुकून/भाव नहीं है
या कोई हृदय में आकर
पत्थर ही बिठा दे।
इसमें कोई धड़कन नहीं है
कोई रक्त भी कहाँ है ?

ज्ञान. मुकेश वर्मा, पटना-800013

पतंग जीवन का फलसफा

पतंग जीवन का फलसफा
उड़ान भरने का सपना
सीख संतुलन बनाए रखने की
पांच हो जमीं पर, निगाहें मंजिल पर
धैर्य,जोश, जज्बा आता है काम
संयमित ध्यान, तन्मयता लक्ष्य
यही सफलता का राज
डोर को साध,पतंग की उड़ान
खुशी का संचार
खेल है मस्ती है आनंद है
संक्रांति का पर्व है
ऋतु परिवर्तन का संदेश और
सूर्य उत्तरायण हुआ संकेत है ?।
भारतीय संस्कृति सर्वोपरी

यह हमारी उपलब्धि
हमारा सौभाग्य है
ऋषि मुनियों का पूर्वजों का
हम पर ऋण और
आशीर्वाद
खूबियां हमारी परंपराओं का
वैज्ञानिक आधार है।

हंसा मेहता इंदौर, 9827730677

लेकिन मैं अभी टूटा नहीं हूँ

लेकिन मैं अभी टूटा नहीं हूँ
जीवन के खेलों से थका नहीं हूँ।
इस जीवन के हर कदम में
मैं विश्रृंखल होता रहा हूँ ।
जिन श्रृंखलाओं में बांधना चाहा मुझे
उन कड़ियों को झटके से तोड़ता हूँ
रफ्तार तोड़ना चाहते थे
मुझे झुकाना चाहते थे ।
उस रफ्तार को फिर से
पकड़ने का निश्चय करता
हूँ ।

अपनी स्मृतियों के साथ
अपने को अभिव्यक्ति दे
ऊपर से ऊपर उठता हूँ।
एक नई दुनिया के साथ
अब कुछ नया करता हूँ ।
क्योंकि अभी मैं टूटा नहीं हूँ
अभी मैं झुका नहीं हूँ।

राजकुमार इंद्रेश

शब्द

तुमने शब्दों में
हथेलियां रख दीं,

मैंने अर्थ से पहले
मौन को पढ़ लिया।

क्योंकि जहां स्पर्श जन्म लेता है,
वहां विचार अनावश्यक हो जाते हैं,

चेतना स्वयं को
किसी परिभाषा में नहीं,
किसी कंपन में प्रकट करती है।

तुम्हारे शब्द
भाषा नहीं थे,

वे देह की स्मृति थे,
वह स्मृति

जो अनुभव होने से पहले
सोची नहीं जाती।

जब मैंने पढ़ा,
मैं पाठक नहीं रहा,

मैं साक्षी बन गया,
अर्थ का नहीं,
होने का।

और सच यही है,
जहां अनुभव स्वीकार किया जाता है,

वहां भाषा
अपना भार उतार देती है,

और दर्शन
जीवन का स्वाभाविक श्वास बन जाता है।

वहां कोई उत्तर नहीं
रहता,
केवल

सह-अस्तित्व।

वीरेंद्र बहादुर सिंह,
नोएडा-201301 (उ.प्र.) मो-

दुनिया में ज़ालिम लोग पड़े हैं... ?

इस दुनिया में ऐसे ज़ालिम लोग भी पड़े हैं,
हमसे करवा ही लेते हैं ऐसे बहुत सारे काम!
वे मेहनताना भी नहीं देते और नोचने खड़े हैं।

क्या बात करें इनकी सर पे ही आ के खड़े हैं,
हमको दिखा देते हैं बिना यात्रा के चारों धाम!
हम जा रहे घर, रास्ता है जाम वे रोकने खड़े हैं।

चित भी मेरी पट भी मेरी की तर्ज पर ये अड़े हैं,
हमको ही दिखाते आँख, ऊंची करते हैं नाक!
हमारी हस्ती मिटाने पूरी ताकत झोंकने चले हैं।

धन की माया में गठरी लेकर
आकंठ डूब चले हैं,
अब पूरे देश में हो गया है
इनका जबरदस्त नाम!
द्रोहियों के आगे सिर झुका
तलवे चाटने चले हैं।

संजय एम. तराणेकर, इन्दौर- ☎98260-25986

एक पौधा मेरी मां के नाम

एक पौधा मेरी मां के नाम। सबसे सुंदर है यह काम।
लेकिन पौधा घर में लगाओ फिर रखो मां जैसा ध्यान।
एक पौधा मेरी मां के नाम।
मां ने तुमको अपने दिल से दूर कहीं जाने ना दिया।
ज्यादा सा रोए अगर गिर गए मने पल में उठा लिया।
जैसे तुमको मन हर पल लाड लडाया और दुलार।
करना है फिर ऐसी सेवा उसे पौधे की सुबह शाम।
एक पौधा मेरी मां के नाम सबसे सुंदर है यह काम।

लेकिन पौधा घर में लगाओ
फिर रखो मां जैसा ध्यान।
जरा हुई तकलीफ अपन को
मन को कितना दर्द हुआ।
इस पौधे को पालना अब
अपना भी धर्म हुआ।
आते जाते करो समर्पित हाथों
से जल ऑंठोयाम।
एक पौधा मेरी मां के नाम सबसे सुंदर है यह काम।
लेकिन पौधा घर में लगाओ फिर रखो मां जैसा ध्यान।

संजय शर्मा इंदौरी (किला मैदान इंदौर।)

बेमुरौवत यह दर्द...ठहर क्यों नहीं जाता
उसके बद्दुआ का असर क्यों नहीं जाता

मैं खुद हैरान हूँ....परेशान हूँ....भीतर से
उस कड़वाहट का जहर क्यों नहीं जाता

यह दुनियॉं कभी नहीं जान पाएगी राज
इतनी रात हो गई मैं घर क्यों नहीं जाता

जो मिट्टी से दूर हुआ फिर वो उजड़ गया
बेटा कैसे कहे वह शहर क्यों नहीं जाता

चिंहुक उठता हूँ .....कई दफे दिन भर में
उम्र के इस पड़ाव पे ड़र क्यों नहीं जाता

अमरूद का पेड़..शिकायत कर रहा था
मेरे बच्चों..तुमसे पत्थर क्यों नहीं जाता

इतना कुछ तो होता रहता है जमाने में
वक्त से पहले 'वंदन' मर क्यों नहीं जाता

मनीष सिंह 'वंदन '
आदित्यपुर, जमशेदपुर

यह क्या हो रहा है ?

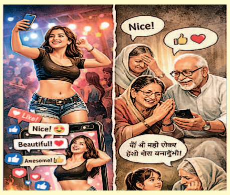
Nice!
Like!
Nice!
Beautiful!
Awesome!

शर्म नाच रही है और संस्कार ताली बजा रहे हैं।
नन्हे कपड़ों में परोसा जा रहा फूहड़पन
और नाम दिया गया है– टैलेंट।
कैमरे के आगे जिस्म उछाला जा रहा है,
और घर के बड़े-बुजुर्ग, सास-ससुर
कमेंट में लिख रहे हैं– nice
यह लाइक नहीं,
यह चरित्र की चिता पर डाला गया घी है।
जिन हाथों में मर्यादा की लगाम होनी थी,
वही हाथ अब मोबाइल थामे
भटकाव को बढ़ावा दे रहे हैं।
फिर जब सीमाएँ टूटती हैं,
तो सवाल समाज से किया जाता है!
आज बेटियाँ गलत राह पर जा रही हैं–
यह रोना आसान है,
पर उन्हें वहाँ तक धकेलने वालों की
सूची में
घर के बड़े भी शामिल हैं–
यह स्वीकारना कठिन।
संस्कार उपदेश से नहीं,
आचरण से उतरते हैं।
अगर घर की आँखें अंधी हों,
तो बाहर की रोशनी क्या करेगी?
समय रहते चेतो–
वरना कल यही नाइस
समाज के चेहरे पर
नाइस नहीं, नासूर बनकर उभरेगा।

वीणा वैष्णव रागिनी
राजसमंद

आती है घनघोर घटाएं

आती है घनघोर घटाएं अंधेरी रात की
किसने जाना अर्धांगिनी का
जीवन क्या है
उठती है अंतर्मन की ज्वाला में वेदना
यही चीतकार है अंधेरी रात की
जिसने खोया जीवन का सहारा
आती है हर रात वेदना की चीतकार
यही अर्धांगिनी का जीवन रह गया
जो बीत गया यौवन में
छिन जाता उजाला रात में

होकर विधवा करे परिक्रमा
कौन सुने कहानी अर्धांगिनी की

अब ना आएगी रुत मिलन की
बीत गया जीवन अर्धांगिनी का
रह गई वेदना की चीतकार
अंधेरी रात में

बहादुर अली इंदौर

रंग बेरंग दुनिया के सारे नजारे हैं,

रंग बेरंग दुनिया के सारे नजारे हैं,
मायामय दुनिया के ढंग निराले हैं।
हम आप तो प्यादे हैं मायापति के,
सब के अस्थायी यहां पर ठिकाने हैं÷ ।

÷गर्व किस बात का करते हो तुम,
मद में अन्धे हुये विचरते हो तुम।
कृतज्ञता जाहिर करी नहीं कभी,
परवरदिगार के घोर अपराधी हो तुम÷।

ललित महालकरी, इंदौर

कितने पहाड़ चढ़ने हैं

अभी और कितने पहाड़ चढ़ने हैं
अहम के दंभ सहने हैं
मन्नतों पर सर पटकने हैं
ख्वाहिशों के पर कतरने हैं
यह दु:ख, संताप और यातना
अवसाद मिश्रित उलाहना
आखिर किसकी है यह मंगलकामना ?

कोई तो है
जो मुझको, मुझसे ज्यादा चाहता है
मुझपर वक्र दृष्टि डालता है

ईश्वर से ऐसी हसरतें पालता है
भला हो उसका
पूरी हो उसकी अभिलाषा
अपना क्या
भले रह जाऊँ प्यासा
हाथ आए निराशा और हताशा.... !!

मनीष सिंह वंदन, आदित्यपुर जमशेदपुर

लगी हिये में आग बसंती

रितु ने छेड़ा राग बसंती
लगी हिये में...
शिखा बिंधी सी रही सँवारे
चूमे गाल अलक कजरारे !!
झुमके झूम रहे श्रोतों में
करे गर्व निज भाग बसंती !!
लगी हिये में...
भेद लिए सी करती बातें
मधुर मोह में करती घातें !!
नयन मूँद कर करे इशारे
मौन हुए स्वर फाग बसंती !!
लगी हिये में...
खड़ी है गौरी किये श्रृंगार
सुर्ख वरण तन चूनर डार !!
भरे अंग रस प्रीत भंग में
रूप से झरे पराग बसंती !!
लगी हिये में...

सजा सुमन से सेज रही वो
नेह निमंत्रण भेज रही वो !!
यौवन पर इतराती बाला
चाहे मिलन सुहाग बसंती
!!
लगी हिये में...

सुदामा दुबे, बाबरी सीहोर

माँ सरस्वती रखना सदा ख्याल हमारा।
डगमगायें जब हम, बन जाना सहारा।

रंगो नश्लों में ही न हम उलझ कर रहे ,
सारा जग ही बने एक परिवार हमारा।

कंठ से निकले सब,शब्द हो मधुरतम,
लगे जैसे भीगी हो अमृतमयी रसधारा।

अनेक विपदाओ से भरा मानव जीवन ,
मिट जाये सब माँ ज़ब साथ हो तुम्हारा।

लिखे,बोले गाये सबही, हम कुछ ऐसा,
अन्तर्मन को लगने लगे सब ही प्यारा।
माँ सरस्वती रखना सदा,ख्याल हमारा।
डगमगायें जब हम, बन जाना सहारा।

महेश गुप्ता 'राही '
गुजरी चौक राजपुर (बड़वानी)

जीत का जश्न

जीत का जश्न
सभी मनाते है।
लेकिन
हार का जश्न
मनोयोगी ही
मना सकते हैं
दूसरा कोई नही।

आनन्द कुमार आनन्दम, कुशहर, शिवहर, बिहार

दुनियां दर्पण है

ये दुनिया भी दर्पण जैसी,
जो दिखे वही लौटाए।
हँसी रखो तो हँसी मिले,
आँसू रखो तो रुलाए॥
मन में अगर उजास भरा हो,
राहें दीप जलाती।
भीतर यदि हो द्वेष ज़रा सा,
छायाएँ डर जाती॥
जो बोएं काँटे राहों में,
वो फूल कहाँ से पाएं ?
जो बाँटे प्रेम दोनों हाथों से
हर दिल में बस जाएं॥
दोष खोजते जो रहते हैं,
खुद से नज़र चुराते।
अपने भीतर झाँकें जो,
वे ईश्वर से जुड़ जाते॥
दर्पण टूटे तो छवि बिखरे,
मन टूटे तो संसार।
मन को साधो,सत्य सँवारो,
सुंदर होगा व्यवहार॥

जैसा भीतर भाव बसे रे !
वैसा बाहर का व्यवहार।
ये दुनिया कुछ और नहीं,
बस मन का ही विस्तार।।

–अनिल कुमार मिश्र विज्ञ, दिल्ली

बालकविता

तुतलाती आवाज

आशीष का बच्चों पर
प्यार भरा आशीष है
%तुतलाती आवाज %
बच्चों का काव्य संग्रह
बच्चों का साथी है
छोटे छोटे नन्हें मुन्ने
बाल मन को हर्षा रही
%तुतलाती आवाज %
बच्चों की जुबानी है...
बच्चे नन्ही आंखों से
पढ़ ही नहीं रहे हैं
चढ़ती सीढियां बचपन की
ले जा रहे हैं साथ अपने
बड़ी शान से बाल किताब
तुतलाती आवाज
में बोल रहे हैं बच्चे-
आतीत अंतल, घनवाद
बली चानदार तिताब,

- लाल बहादुर श्रीवास्तव

यही माहौल रहा तो

÷तुम देखोगे।
तुम देखोगे।।
हर चार क़दम पे बरबादी,
मुस्तक़विल में ये आज़ादी।
वहशत का चोला पहनेगी,
फ़ितरत दहशत में बदलेगी।
ना इत्तिहाद बाक़ी होगा,
ना इत्तिफ़ाक़ बाक़ी होगा।
ना सुकूं कोई लम्हा देगा,
इक लफ़्ज़ बग़ावत गूंजेगा।
सड़कों पर केवल हंगामा,
खूँ-आलूदा सब का जामा।
हाथों में बस ख़ूनी खंजर,
सनसनीखेज़ जलते मंज़र।
तीखी ज़हरीली सरगोशी,
कुछ ख़ौफ़नाक सी ख़ामोशी।
इक आँगन में दस दीवारें,
कुछ भिंचे गलों की चित्कारें।
अलगाव जगाते कुछ नारे,
इंसां बस आफ़त के मारे।
मुट्ठी, मुक्के, घूंसे, लातें,
हिंसक नारे, थोथी बातें।
नफ़रत समाज मे बांटोगे,
जो बोया है वो काटोगे।
जब भीड़ में ख़ुद को पाओगे,
ख़ुद में तन्हा रह जाओगे।
ना जुमलों-झांसों में आओ,
ना ख़्वाबों से दिल बहलाओ।
वरना इक दिन वो आएगा,
सब कुछ तबाह हो जाएगा।
गोली, बंदूकें, बम होंगे,
ना तुम होंगे ना हम होंगे।।÷

प्रणय प्रभात, श्योपुर (मप्र)

बेईमान मौसम

मकान था आजकल खंडहर हुआ करता है,
कई बेघर परिंदों का घर हुआ करता है।

किसी ने कहा औ मूंदकर आंख भरोसा जो किया,
आधा सच गलतफहमियों की वजह हुआ करता है।

घर की बातें घर ही में रहें तो अच्छा है 'अतुल',
वर्ना ये सारा गांव तमाशबीन हुआ करता है।

बात नहीं करते लोग परीशां से भागते हैं यहां
चमचमाता शहर गांव से बहुत अलग हुआ करता है।

शोहरत मिली कुछ खुद को खुदा समझने लगे,
ये मौसम अक्सर बेईमां हुआ करता है।।

अतुल कुमार खरे, वसंत विहार, नई दिल्ली-110057, 560404367

जाड़ों का मौसम

तन्हाई के साये बदलते मौसम उनके हुनर जूनून देती है,
लगती ठंड ज़िस्म में मोहब्बत के एहसासों का मजुमुन देती है ।

मस्त फिजाओं की रौनक यादों के झरोखों का पैगाम आता है,
जाड़ो का मौसम और सुहानी धूप मेरे मन को जूनून देती है,

कारंवा जिंदगी का बढ़ता चला हरदम तूफानी राहों में रहे,
बढ़ते हूए कोहरे से हर तपन बढ़ा गर्मी का सुकून देती है ।

शाम जमीं ढलते हुए सूरज की लालिमा ठंड का अहबाब है,
चंद्रमा की रौशनी में जाड़े से बचने की बनियान उन देती है ।

चाहत की नजरों से उल्फत के पैमाने अचानक छलक जाते हैं,
उल्फत की नुमाइश कांपते हाथों से प्याली चाय जूनून देती है ।

लाख आंधियों के बीच भी एहसास ए मस्त जिंदगी का होता है,
सल्तनत ए जागीर उनकी ठंड से बचने का हुनर रुहुन देती है ।

जाड़ों का मौसम और मचलती धूप मन को
प्रफुल्लित करती है,
खेतों में हरियाली चने की खेती में भरती खार
सुगुण देती है ।

कातिल समझे कातिल नहीं हम ठंड का मौसम
बढ़ती सर्द रातें है,
तूफान में ठंड अंधकार में जलती दिपक की लौ सुकून देती है ।

के, के, कौशल, इन्दौर, मध्यप्रदेश,

मुस्कान मंडल

यह सिर्फ मेरी किटी पार्टी नहीं–
यह उन स्त्रियों का मण्डल है
जिनकी उपस्थिति भर से मानो
सूखे पौधों में हरियाली लौट आती है।
वे मुस्कुराहटों की शिल्पकार हैं–जो
माथे की शिकन को क्षण भर में
खिलखिलाहट में बदल देती हैं।
निराशा उनके दरवाज़े पर
घंटी बजाने की भी हिम्मत नहीं करती।
इनके भीतर का बचपन
इतना निर्मल, इतना चंचल है
कि बच्चों के खेल में
ये बच्चों से भी आगे निकल जाती हैं।
अब वे दुनिया की फुसफुसाहटों से नहीं डरतीं;
चार लोगों की राय को
वे अपनी मुट्ठी की झुकती हुई उँगली पर
हवा में उछाल देती हैं।
उन्हें यह गूढ़ सत्य समझ आ गया है–
कि जीवन में कुछ पल
स्वयं के लिए भी सुरक्षित रखने होते हैं।
चौका-बासन की परिधि से बाहर भी
ज़िंदगी झिलमिलाती दिखाई देती हैं ,
जिसे थामते ही भीतर रोशनी भर जाती है।
जिम्मेदारियों की भीड़ में
वे चुपचाप कुछ पल चुन लेती हैं–
और जब ये सब साथ बैठती हैं,
एक पुष्प-उद्यान-सा लगता है–
जहां हर कली अपनी रंगत से
ज़िंदगी को गुलज़ार कर देती है।
फिर ये उठती हैं–
झूमती हैं– और एक बार फिर
अपनी निश्चल, उजली,
जीवनदायनी मुस्कान से
पूरे दिन को प्रकाशमान कर देती हैं।

नम्रता यादव, इंदौर मध्यप्रदेश

गीतिका

कभी मुर्गा कभी उल्लू कभी बन कर गधा देखा
लेकिन जब बने गिरगिट,तब असली मजा देखा

कभी टच हो नहीं पाया,कभी सच हो नहीं पाया
हमने जब भी स्वपन देखा, क्षमता से बड़ा देखा

ठोकर मार कर जिसका कभी अपमान करते थे
सफल हुए तो वहीं पत्थर, अंगूठी में जड़ा देखा
जरूरी होती है हिम्मत भी उड़ान भरने के लिए
महज पंखों से उड़ा जो भी, उड़ते ही गिरा देखा
समझता नहीं था जो कुछ भी कभी किसी को
कुर्सी से उतरते ही, उसे गुमनामी में दबा देखा

डॉ पुनीत कुमार, मुरादाबाद 244001